उठो, बस एक कदम और...

-ब्र.कु. शोभिका,शांतिवन।

महान दार्शनिक- कन्फ्यूशियस ने कहा है- ''आप किसी भी व्यक्ति की दृढ़ इच्छा-शक्ति को परास्त नहीं कर सकते, भले ही किसी विशाल सेना को परास्त कर लें।'' ''जूलियस सीजर के बारे में कहा जाता है कि उसने जितनी विजय प्राप्त की, उसमें उतनी सैनिक योग्यता नहीं थी, लेकिन उसमें क्रियाशीलता थी, उसमें दृढ निश्चय तथा प्रबल इच्छाशक्ति थी।'' सभी महान व्यक्ति जो दूसरों की तुलना में अधिक ऊँचे उठे वो केवल अपनी इच्छाशक्ति और अपने सामर्थ्य के कारण।

प्रत्येक व्यक्ति जीवन में सफलता प्राप्त करना चाहता है, उन्नति करना चाहता है, आगे बढ़ना चाहता है, सभी समस्याओं पर विजयी बनना चाहता है। मनुष्य चाहता तो बहुत कुछ है परंतु यह सफलता मिलेगी कैसे यह जानने का प्रयास करना नहीं चाहता। बार-बार असफलता का मुंह देखते-देखते वह भूल जाता है कि असफलता शब्द स्वयं में ही सफलता को समेटे हुए है। प्रत्येक असफलता, सफलता की ओर कदम बढ़ाने की एक सीढ़ी है। जहाँ असफलता है वहाँ सफलता समाई हुई ही है इसलिए हमें निराश होने की आवश्यकता नहीं है, हमें कुछ जोड़ने का प्रयास नहीं करना है बल्कि असफलता से अ को तोड़ने की आवश्यकता है। जिस पल ये दीवार गिरती है उसी पल सफलता सामने दिखाई देने लगती है। असफल केवल वही व्यक्ति होता है जो सफलता के अवसरों से मुंह मोड़ लेता है।

किसी भी व्यक्ति की सफलता के लिए उसे मेहनत, लगन, धैर्यता एवं सरलता की आवश्यकता है। यदि व्यक्ति धैर्य खो दे तथा असफलताओं से हार खाकर प्रयास करना ही बंद कर दे तो वह कभी सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। यदि बार-बार असफलता मिल रही है तो यह निश्चय और भी दृढ़ हो जाना चाहिए कि सफलता अब ज्यादा दूर नहीं। केवल आवश्यकता है सच्चे दिल से उस ओर परिश्रम करने की एवं पूर्ण विश्वास की कि सफलता तो मिली ही हुई है।

संसार के महान वैज्ञानिक अलबर्ट आइंस्टाइन ने एक बालक के पत्र के जवाब में सफल होने का मंत्र बताते हुए लिखा- ''हिम्मत न हारो।'' बचपन में मुझे बुद्धू कहा जाता था। लड़के मेरी पीठ पर काठ का उल्लू लिख दिया करते थे। प्रश्नों का सही उत्तर न दे सकने के कारण स्कूल में प्राय: रोज़ ही मुझे सज़ा मिलती थी। अध्यापक कहा करते थे कि मैं सात जन्म में भी गणित में पास नहीं हो सकूंगा। इतने पर भी मैंने हिम्मत नहीं हारी। लगातार असफलताओं का मुकाबला करते हुए मैं विद्या-अध्ययन में लगा रहा और उसी का फल है, जैसा कि तुम मुझे देखते हो। मैंने हिम्मत नहीं हारी और अपना रास्ता बनाया। तुम भी यदि जीवन में सफल होना चाहते हो तो हिम्मत न हारो।

एक बार की बात है आइंस्टाइन डेढ़ वर्ष से एक प्रयोग में लगे थे और लगभग सात सौ बार असफल हो चुके थे। उनका साथी थक चुका था परंतु आइंस्टाइन में वही ताज़गी थी। उनके साथी ने पूछा कि सात सौ बार असफल होने के बाद भी आप प्रसन्न कैसे हैं? आइंस्टाइन ने कहा कि तुम्हारे देखने का ढ़ंग गलत है। मैं सोचता हूं कि सात सौ रास्ते हमने खोज लिए हैं और वे सब गलत हो गए। अब ठीक रास्ता करीब आता जा रहा है। अब सात सौ रास्तों पर भटकने की ज़रूरत नहीं रही। हो सकता है सात सौ एकवां रास्ता सही हो, तो हमने सात सौ काट डाले। हमारा प्रयोग असफल नहीं हो रहा है, बल्कि हम असफलता को काट रहे हैं और सफलता के करीब पहुँच रहे हैं।

हम यदि सफल व्यक्तियों का इतिहास देखें तो पता चलता है कि उन्हें उस सफलता को प्राप्त करने से पहले असंख्य बार असफलता का मुंह देखना पड़ा। परंतु उन्होंने इन असफलताओं से निराश होकर बैठने के बजाय इन्हें ही सफलता की मंजिल तक पहुँचने का मार्ग बनाया। सफलता प्राप्त करने के लिए एकाग्रता की भी बहुत आवश्यकता है। व्यक्ति को अपनी बुद्धि की समस्त शक्ति एवं अपनी एनर्जी एक ही लक्ष्य पर केन्द्रित करनी होगी। उसमें अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की तीव्र इच्छा होनी चाहिए तथा उसके मन में ऐसी कोई भी भावना नहीं आनी चाहिए जो उसे उसके लक्ष्य से हिलाने का प्रयत्न करती हो। व्यक्ति को एक समय पर एक ही कार्य करना चाहिए और अपनी संपूर्ण शक्ति केवल उसी पर लगानी चाहिए। कठिनाइयां आने पर अपना मार्ग परिवर्तन नहीं करना चाहिए। आजकल देखा जाता है कि अधिकतर मनुष्य रास्ते में आने वाली कठिनाइयों एवं परेशानियों से हार खाकर बैठ जाते हैं, हिम्मत हार जाते हैं और अपना मार्ग बदलने की सोचने लगते हैं। हमें यहाँ यह याद रखना चाहिए कि कई किश्तियों पर सवार होने वाले राही मंजिल पर पहुँचने के बजाय डूब जाया करते हैं। इसलिए यदि हम सचमुच सच्चे दिल से अपने लक्ष्य को प्राप्त करना चाहते हैं तो उसके प्रति पूर्ण रूप से समर्पित हो जाएं। परंतु साथ ही उन्हें यह भी ध्यान रखना होगा कि उस कार्य के प्रति उनकी रुचि भी होनी चाहिए, उस कार्य से उन्हें मोहब्बत होनी चाहिए क्योंकि केवल मेहनत सफलता नहीं दिला सकती। हमारी जिस कार्य में रुचि हो और वो हमें न आती हो या बार-बार असफलता मिल रही हो तो सफलता का प्रयास कभी नहीं छोड़ना चाहिए क्योंकि जिसमें आपकी रुचि होती है उसके प्रति मेहनत करने से सफलता अवश्य प्राप्त होती है।

किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति में दृढ़ संकल्प बड़ा ही सहायक सिद्ध होता है, क्योंकि दृढ़ संकल्प में बड़ी शक्ति छिपी होती है। संकल्प ही व्यक्ति को कुछ करने की प्रेरणा देता है और उसमें लगन पैदा होती है। जब एक बार व्यक्ति दृढ़ संकल्प कर लेता है तो कैसी भी परिस्थिति को सहजता से पार कर लेता है। जो व्यक्ति दृढ़ संकल्प नहीं करते और अपने उद्देश्य को कल पर टालते रहते हैं अथवा अपने विचारों को कार्य में नहीं लगाते वे कभी सफल नहीं हो सकते। वे अपने सिर पर सदा असफलता की टोकरी उठाये रखते हैं और उसके बोझ तले दबते जाते हैं। जबकि दृढ़ संकल्प करने वाला व्यक्ति उसी क्षण से अपने विचारों को कार्य रूप देने में लग जाता है और सभी असफलताओं को आसानी से पार कर लेता है। यदि व्यक्ति अपने विचारों को कार्यरूप प्रदान कर सके तो वह इतना श्रेष्ठ और सफल बन जायेगा कि इतिहास के पन्नों में उसका नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा।

शब्दों के जोड़ से वाक्य, विधि से विधान तथा सिद्धि से सिद्धांत बनता है। इतिहास गवाह है कि जितने भी शूरवीरों ने सफलता का परचम लहराया वे सभी नीचे से ही उठे, अगर गिरे भी तो हार नहीं मानी, उसी जज़्बे के साथ आगे बढ़े और कामयाबी हासिल कर इतिहास में अमर हो गये। इतिहास में नाम दर्ज़ कराना है तो दर्द को भूल दम भरो और फिर न रुको.....।

सोच का प्रभाव - पेज 1 का शेष...

कुलपति डॉ.दिलीप गोडे ने कहा कि मनुष्य की चेतना जब संगठित रूप से एक ही प्रकार का संकल्प करती है तो उसकी सामूहिक सोच का प्रभाव स्वास्थ्य को भी प्रभावित करता है। राजयोग से प्राप्त होने वाली ऊर्जा शरीर से परे की आत्मिक अनुभूति कराती है, जिससे आत्मिक शक्ति का प्रवाह पूरे शरीर को स्वस्थ रखने का तीव्र गति से कार्य करता है। ज्ञानसरोवर की निदेशिका ब्र.कु.डॉ.निर्मला ने कहा कि परमपिता शिव सर्वोच्च चिकित्सक हैं। उनकी चिकित्सा का लाभ लेने के लिए उनके उपचार के नियमों व परहेज को जीवन शैली में उतारने की ज़रूरत है। राजयोग से निरोगी, कर्म में हल्कापन, व्यवहारिकता में सरलता का अनुभव कर जीवन को खुशियों से भरपूर कर सकते हैं।

ब्रह्माकुमारीज़ मेडिकल विंग के अध्यक्ष व प्रसिद्ध कैंसर विशेषज्ञ डॉ.अशोक मेहता ने कहा कि वर्तमान परिवेश में समाज जिस दौर से गुज़र रहा है उसमें हर मनुष्य तनाव व अवसाद जैसी विकृतियों की मार झेल रहा है। ज़हर समान व्यर्थ चिन्तन धीरे-धीरे स्वास्थ्य को कुरूप बना देता है। तन और मन दोनों को निरोगी बनाने के लिए राजयोग को गंभीरता से जीवनचर्या में शामिल किया जाना चाहिए। ब्र.कु.शिवानी ने कहा कि यदि मनुष्य आत्मा के मूलभूत संस्कारों शक्ति, गुण, शान्ति, आनंद, पवित्रता, प्रेम आदि की स्मृति व अनुभूति में रहकर उसको वातावरण में प्रवाहित करे तो इसके आधार पर एक स्वस्थ व सुखमय मानवीय संस्कृति और श्रेष्ठ सभ्यता का निर्माण हो सकता है।

चेन्नई। तमिलनाडू के गवर्नर के. रोसई को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.बहन। साथ हैं ब्र.कु. बीना।

ब्रह्मपुर-ओडिशा। रक्षाबंधन के पावन पर्व पर ''परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन का समय'' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए डॉ. पी.सी.पात्र, ब्र.कु. माला, डॉ. आर.सी.सी. पटनायक, विधायक, ब्र.कु. मंजु तथा बी.बी साहु।

बुलन्दशहर-उ.प्र.। एस.एस.पी. अखिलेश कुमार मीना को राखी बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रचना।

चन्द्रपुर-महा.। महेन्द्र भाईसारे,डिवीज़नल कंट्रोलर,चन्द्रपुर व गडचिरोली डिवीज़न को रक्षाबंधन के अवसर पर आत्म स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु. कुसुम। साथ हैं अन्य बहनें।

बोंगईगांव-असम। एस.आर. नज़ारी,चीफ मैनेजर,बोंगईगांव रिफाइनरी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. लोनजी।

चितौड़गढ़-राज.। जिलाधिकारी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शिवली।